हिंदी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

लखनऊ से प्रकाशित

गया कि ज्यादा पॉजिटिव केस ।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा कुलपति

यूपी मैसेंजर संवाददाता3-कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था।

जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है।

विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है । कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी।

उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है।उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है एवं उसी में कामकाज किया जाता है।जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। तो हम अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा

डीटीएनएन, कानपुर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने आज 14 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने

गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है । कुलपति ने कहा कि मा.प्रधानमंत्री जी ने भी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है।उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है एवं उसी में कामकाज किया जाता है।जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। तो हम अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारी, शिक्षक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों तथा छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

Title-code: UPHIN-48963
E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com
सत्य का असर
समाचार पत्र

15,09, 2023jksingh.hardoi@gmail.com 9956834016

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है:- कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने आज 14 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है । कुलपति ने कहा कि मा.प्रधानमंत्री जी ने भी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है।उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है एवं उसी में कामकाज किया जाता है।जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। तो हम अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारी, शिक्षक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों तथा छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

अनंतनाग में सेना-आतंकियों के बीच लगातार दूसरे दिन फायरिंग 12 | अखिल भारतीय उद्

जन एक्सप्रेस

लखनऊ | वर्षः 14 | अंकः 330 | मूल्यः ₹ 3.00/- | पेज : 12 शुक्रवार | 15 सितंबर, 2023

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

14 सितंबर हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता की दिलाता है याद: कुलपति

जन एक्सप्रेस | प्रदीप शर्मा

कानपुर नगर। देश भर में 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया था जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। यह बात चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.आनंद सिंह ने गुरुवार को हिंदी दिवस के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। डॉ.सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय में विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग होने के साथ हिंदी में

पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने भी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। क्योंकि मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है।उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है एवं उसी में कामकाज किया जाता है।जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। तो हम अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारी, शिक्षक, वैज्ञानिक, कर्मचारी तथा छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 15 अंक : 76 कानपुर, शुक्रवार 15 सितम्बर 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा : कुलपति

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है । कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा

की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है।उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है एवं उसी में कामकाज किया जाता है।जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। तो हम अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारी, शिक्षक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों तथा छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने आइकॉनिक हाइलक्स का किया प्रदर्शन

कानपुर । टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने नॉर्थ टेक सिम्पोजियम (एनटीएस) में विशेष उद्देश्य वाले दो आइकॉनिक हाइलक्स का प्रदर्शन किया। इन्हें एक अधिकृत बाहरी विक्रेता के सहयोग से संशोधित किया गया है। यह टेक्नालॉजी प्रदर्शित करने का वार्षिक आयोजन है। इसका आयोजन भारतीय सेना के उत्तरी कमांड ने किया था। इसमें उसे सोसाइटी ऑफ इंडियन डिफेंस मैन्युफैक्चरर्स (एसआईडीएम) और आईआईटी जम्मू का सहयोग मिला। इस आयोजन का उद्देश्य अत्याधुनिक स्वदेशी विकास और रक्षा तकनीकी क्षमताओं के उत्पादन को बढ़ावा देना और आत्मनिर्भरता रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करना है।

उपदेश टाइम्स

कानपुर से प्रकाशित एवं कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, गोण्डा, जौनपुर, फिरोजाबाद, जालौन उई, कन्नौज, फरूखाबाद, एटा मे प्रसारित

कानपुर, शुक्रवार 15 सितम्बर 2023 पृष्ठ : 8

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा 1949 में चौदह सितंबर को मिला था राज भाषा का दर्जा

कानपुर नगर उपदेश टाइम्स सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी भाषा की महत्वत्ता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है एवं उसी में कामकाज किया जाता है जापान इसका प्रमुख उदाहरण है जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं तो हम अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्वविद्यालय परिवार के सभी अधिकारी, शिक्षक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों तथा छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी।

हिन्दी दैनिक

RNI NO - UTTHIN/2018/76731

गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

023 | वर्ष:06 अंक: 25 | पेज: 08, मूल्य: 2 रूपये | उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट,गुजरात,संघ प्रदे

हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है.. कुलपति

दि ग्राम टुडे , कानपुर। (संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने आज 14 सितंबर 2023 को हिन्दी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिन्दी भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिन्दी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिन्दी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद

कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिन्दी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है । कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने भी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है।उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है एवं उसी में कामकाज किया जाता है।जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। तो हम अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिन्दी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिन्दी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारी, शिक्षक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों तथा छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

Sign in to edit and save changes to this file.

अंक-189 कानपुर, शुक्रवार 15 सितम्बर 2023 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौहना, बाना, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है-कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने आज 14 सितंबर 2023 को हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है । कुलपति ने कहा कि मा.प्रधानमंत्री जी ने भी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है।उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है एवं उसी में कामकाज किया जाता है।जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। तो हम अपनी मातृभाषा में क्यों नहीं हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारी, शिक्षक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों तथा छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।